वर्णमाला में दूसरा वर्ग : 'च, छ, ज, झ, ञ' से आरम्भ होने वाले शब्द

'च' अक्षर के शब्द

209. चक : चोटी में बॉधने का सोने का चक्र ।
210. चक्र या चक्र : कुम्हार का चाक । धातु का बना छोटा और पतला, गोलाकार अस्त्र, जिसे दूर से घुमा कर फैका जाता है । घेरा । घुमाव । समूह । राज्य।
211. चक्रकार : मण्डलाकार । गोल ।
212. चक्कर : घुमाव। पहिये का गोलाकार घुमना या भ्रमण । जटिलता । पानी का भॅवर । चकोह । सिर का घूमना जिससे खड़े रहना मुश्किल हो । व्यग्रता । गोल घेरा ।
213. चक्रवातः बवंडर । तूफानी हवाएँ जो चक्कर में वेग से घूमती हैं
214. चक्रवृद्धि : ब्याज को मूल में जोड़ कर उसपर सूद लगाना

215. चंचरी : पानी का भंवर । होली में गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत जो हल्की चंचलता प्रकट करता है ।
216. चंचलाई : स्थिर न बैठ पाना । चपलता । चंचलता । चंचलताई
217. चम्पत : गायब हो जाना । मुसीबत आती देख तेजी से भाग कर खो जाना ।

218. चट : शीघ्र , झटपट, तुरंत , चटपट ।
219. चटक : अधिक तेज़ रंग । चमकीले रंग का कपड़ा ।
220. चटकीला : चमकीला या भड़कीला वस्त्र ।
221. चटकन : कॉच या शीशे की वस्तु में बारीक दरार या टूटने की पतली लकीर ।

222. चटचटाना : चटचट करते हुए टूटने की धीमी ध्वनि ।
223. चटनी : भोजन के साथ खाया जाने वाला एक व्यंजन जो खट्टा या मीठा या खट्टे में मीठास लिये होता है और भोजन को अधिक स्वादिष्ट बनाता है ।
224. चटपटा या चटपटी : तीक्ष्ण या तेज मिर्च के मिश्रण के साथ खट्टे मीठे स्वाद वाला खद्य पदार्थ ।
225. चरपरा : स्वाद में तीखा ।

226. चढ़ना : ऊपर उढना , उन्नति करना । बढ़ना । नदी में बाढ़ आना । सवार होना । वर्ष या महीने का आरम्भ होना । पकने के लिये ऑच पर रखे जाना । लेप लगाना ।
227. चढ़ाना : ऊँचाई पर पहुँचाना । मूल्य बढ़ाना । इष्ट देवता को अर्पण करना । बही खाते में लिखना । पकाने के लिये ऑच पर रखना । मढ़ना ।
228. चढ़ाव : चढ़ने की प्रक्रिया या भाव वृद्धि ।
229. चढ़ावा : वर की ओर से कन्या को विवाह के दिन पहिनाया गया गहना ।

230. चतुर : निपुण , तेज बुद्धि वाला या वाली।
231. चतुरंग : शतरंज का खेल ।
232. चतुरमास : बरसात के चार माह ।
233. चतुर्दिक : चारों दिशायें । चारों ओर ।

234. चमक : प्रकाश । ज्योति । कान्ति । शरीर के किसी अंग में एकाएक मॉसपेशियों का तन जाना ।
235. चमकना : कान्तियुक्त होना । जगमगाना । प्रकाशित होना । भड़क उठना । एकाएक पीड़ा उत्पन्न होना । लचकना ।

236. चरनि : चाल की अदा । पैदल चलने की गति ।
237. चरनी : पशुओं के चरने का स्थान ।
238. चराचर : संसार, जगत ।
239. चरपराना :घाव के सूखने पर होने वाली पीड़ा ।
240. चिरमिराना:घाव पर तेज दवा लगाने से होने वाली पीड़ा ।

241. चर्चा : वर्णन । वार्तालाप जिस में एक विषय के विभिन्न पहलू के बारे में विचार किया जाता है । जनश्रुति । किसी बात का सब को पता लग जाना ।
242. चर्चित : वह विषय या व्यक्ति जिस की चर्चा हो रही हो ।

243. चलन : गति , चाल, व्यवहार । रीति ।
244. चलनसार : व्यवहार में प्रचलित ।
245. चलना : जाना । सफल होना । निर्वाह होना ˙ प्रयुक्त होना । व्यवहार में आना ।
246. चलाना : चलने में लगाना । व्यवहार करना । किसी अस्त्र का उपयोग करना । प्रेरित करना । आरम्भ करना । प्रचलित करना।
247. चलाचलौ : बहुत से लोगों का एक साथ प्रस्थान करना ।

248. चॉद : चन्द्रमा , चन्द्र ग्रह, मस्तक के बीच का भाग।
249. चॉदी : आर्थिक लाभ , रजत, एक बहुमूल्य धातु । रौप्य ।
250. चॉदनी : चन्द्रमा का प्रकाश । बिछावन की उज्जवल सफेद रंग की बड़ी चादर , जो बैठकों में मोटे गद्दे पर बिछाई जाती है ।

251. चाक : कुम्हार का गोल पत्थर, जिसको घुमाकर और उसके बीच के खाली स्थान में गीली मिट्टी रख कर , वह पात्र बनाता है ।

252. चाका : चीनी का बना बड़ा बताशा जो त्योहारों पर या विवाह में अतिथियों को विदा करते समय दिया जाता है ।

253. चाकी : घरों में हाथ से चला कर आटा पीसने की चक्की ।

254. चाकना : पारम्परिक घरों में विशेष पूजा के लिये या रसोई में, स्थान को सीमाबद्ध करने के लिये चारों ओर रेखा खींचना, ताकि व्यक्ति विशेष के आलावा दूसरा कोई उस के भीतर न जाए ।

255. चाटु : मीठी बात । प्रियवार्ता । झूठी प्रशंसा ।

256. चाटुकार : मीठी, झूठी बातों से, अपना छिपा स्वार्थ पूरा करने के लिये, प्रशंसा करने वाला व्यक्ति ।

257. चार : तीन और एक की संख्या । गिनती में तीन के बाद आने वाली संख्या ।

258. चारा : पालतु पशुओं के खाने के लिये कटी हुई हरी या सूखी घास जिसमें भीगे हुए चने जैसी अन्य चीज़ें भी मिला दी जाती हैं ।

259. चारखाना : एक प्रकार का कपड़ा जिसमें ताने और बाने के रंगीन धागों से चौखट खाने बुने हुए होते हैं ।

260. चारी : आचरण या व्यवहार करने वाला व्यक्ति ।

261. चारु : सुन्दर , रुचिर , मनोहर ।

262. चिढ़ : क्रोध सहित अप्रसन्नता । अप्रसन्न होना । कुढ़न ।

263. चिड़ी : ताश के चार तरह के पत्तों में से एक तरह का पत्ता जिसमें काले रंग के चिन्ह होते हैं ।

264. चित : पीठ के बल गिरके पड़ा हुआ व्यक्ति । कहावत है 'चारों खाने चित ' यानि पूरी तरह से हारा हुआ।

265. चितचोर : मन को लुभाने वाला या वाली । प्रिय । मनोहर ।

266. चित्त : अन्तःकरण, वृति, मन, जीया ।

267. चीरा : एक प्रकार का रंगीन लहरिया वस्त्र जिसकी पगड़ी बॉधी जाती है ।

268. चीरना : फाड़ना । विर्दीण करना । किसी कपड़े या कागज के दो से अधिक टुकड़े करना ।

269. चुकता : ऋण मुक्त करना या किया हुआ ।

270. चुकना : समाप्त होना ।

271. चुकाना :ऋण निःशेष करना ।

272. चुगना : पक्षी का चोंच से दाना उठा कर खाना ।

273. चुगाना : बूँद बूँद कर के टपकाना । किसी को मूर्ख बनाना ।

274. चुप : मौन । मूक । न बोलना ।

275. चुपचाप : मौन रहकर । गुप्त रूप से । बिना आवाज या शोर के । किसी दूसरे को बताये बिना ।

276. चुरना : किसी वस्तु का पानी में खौलना ।
277. चुराना : चोरी करना । ऑख बचा कर दूसरे की वस्तु को बिना उसकी अनुमति के ले लेना ।

278. चूर : महीन कण । टुकड़े । चूर्ण । निमग्न , लीन , उन्मत्त ।
279. चूरन या चूरण : महीन पीसी हुई औषधि जो भोजन के बाद खाई जाती है ।
280. चूरमा : एक पकवान जो रोटी या पूरी को चूर चूर करके , घी में भून कर, चीनी मिला कर बनाया जाता है ।
281. चूरा : किसी वस्तु का पिसा हुआ रूप ।

282. चेत : चेतना । चितवृत्ति ।
283. चेतन : जीव । आत्मा ।
284. चेतना : मनोवृत्ति । बुद्धि ।
285. चेतनीय : जानने योग्य ।
286. चेतावनी : सावधान करने की क्रिया ।
287. चोट :टक्कर या मार से लगा घाव या उस के कारण होने वाला दर्द ।
288. चोटी : शिखर । पर्वत या पहाड़ का सबसे ऊँचा हिस्सा। स्त्रीयों के लम्बे बालों को गूँध कर बनाई गुथ्थी ।

289. चौका : चार चिन्हों वाला एक ताश का पत्ता । एक प्रकार का ठोस बुना हुआ कपड़ा । पत्थर का चौकोर टुकड़ा । हिन्दुओं की पारम्परिक रसोई, जिसमें केवल भोजन पकाने वाला व्यक्ति ही जा सकता है । गॉव के घरों में , स्वच्छता के लिये, मिट्टी और गोबर को मिला कर लेपा हुआ कच्चा ऑगन ।

290. चौखट : देहलीज़ । घरों के द्वार पर बनी छोटी सी मुडेर जिस के कारण द्वार के नीचे कोई पतला सा स्थान भी नहीं रहता । इस से कीड़े मकौड़ो भी घर में नहीं घुस सकते । चार लकड़ियों को जोड़ कर बनाया हुआ ढॉचा जिस में किवाड़ के पल्ले लगे होते हैं ।

291. चौपट : चारों ओर से खुला हुआ । नष्ट भ्रष्ट ।

292. चौपड़ : चौसर का खेल, जो बिसात के चार रंगो की चार चार गोटियों से, दो व्यक्तियों द्वारा खेला जाता है ।

293. चौपाई : एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं ।

294. चौफला : एक प्रकार का अस्त्र जिसमें चार धार होती हैं ।

295. चौबारा : घर के ऊपर की कोठरी जिसमें चारों ओर खिड़कियॉ बनी होती हैं ।

296. चौराहा :वह स्थान जहॉ चार दिशाओं से राहें आ कर मिलती हैं।

297. चौहरा : चार तह या परत का । चौगुना ।

'छ' अक्षर के शब्द

298. छटा : बिजली की चमक। छवि ।

299. छत : चूना, सीमेंट , कंकड़ आदि मिला कर बनाई मकान के ऊपर की भूमि ।

300. छतना : पत्तों का बना हुआ छाता ।

301. छानना : महीन छिद्रों में से निकाल कर किसी पदार्थ को नीचे गिराना ताकि महीन और मोटे अंश अलग अलग किये जा सकें । छानबीन करना ।

302. छल : कपट, बहाना । धूर्तता ।

303. छलन : छल करने का कार्य ।

304. छलक : किसी द्रव्य पदार्थ का बरतन से उछल कर बाहर गिरना । छलकाना । छलकन । उछाल ।

305. छिनना : छीन लिया जाना ।
306. छीनना : बलपूर्वक किसी दूसरे की वस्तु उससे ले लेना ।
307. छीलना : छिलका उतारना ।
308. छिन्न : काट कर उतारा हुआ ।
309. छिन्न भिन्न : नष्ट भ्रष्ट । टूटा फूटा ।

310. छुड़ाना : मुक्त करना या करवाना । बन्धन से मुक्ति दिलवाना ।
311. छुटकारा : पकड़ कर अलग करना । उलझी हुई वस्तुों को अलग अलग करना । दूसरे के अधिकार से मुक्त करना । नौकरी से हटाना ।

312. छेद : छिद्र । वस्त्र में छोटा सा फटा हिस्सा । दिवार में सेंध नुमा छोटा सा बिल ।
313. छेदन : काटने या चुभाने की क्रिया ।

ज अक्षर के शब्द

314. जकड़ या जकडना : कस के ऐसे पकड़ना या बॉधना कि हिलडुल भी न सके ।
315. जग : संसार , जगत् । सोने के बाद उठने की क्रिया ।
316. जगत : कुवें के ऊपर का चारों ओर का चबूतरा ।
317. जगत सेठ : बहुत बड़ा धनवान ।
318. जगद : पालक । रक्षक।

319. जगती : पृथ्वी ।
320. जगतीतल : भूमि ।
321. जगत्साक्षी : रवि ।
322. जगना : नींद से उठना । सचेत हो जाना । जगमगाना ।
323. जगाना : नींद छोड़ने के लिये किसी को प्रेरित करना ।

324. जटल : झूठ मूठ की बात । अफवाह । बकवास।
325. जटिल : अत्यन्त कठिन कार्य ।

326. जड़ित : जड़ा हुआ। इस प्रकार से गढ़ा हुआ जैसे पौधों या वृक्षों की जड़ होती है । जिसे निकालना कठिन हो ।
327. जड़ : मूल । अचेतन । चेष्टाहीन । मन्दबुद्धि । गहरा । सर्दी के कारण ठिठुरा हुआ । किसी बात या स्थिति का कारण । आधार । वृक्ष का वह हिस्सा जो भूमि के नीचे रह कर उसे एक स्थान पद जकड़े रहता है ।
328. जड़ी : पौधों और वृक्षों का वह हिस्सा जो औषधियों के रूप में उपयोग किया जाता है ।

329. जन : लोग , समूह , समुदाय , प्रजा, अनुयायी ।
330. जननी : उत्पन्न करने वाली ।
331. जनक : जन्मदाता, पिता ।

332. जनचर्चा : लोक प्रवाद ।
333. जनवासा : बारातियों के ठहरने का स्थान ।
334. जमामार : अनुचित तरह से दूसरे का धनद बा लेने वाला या वाली ।
335. जर : वृद्धावस्था ।
336. जर जर : जीर्ण बहुत पुराना कपड़ा।

337. जर्जरित : खंडित । टूटा फूटा ।

338. जल : पीने लायक पानी , शुद्ध जल ।
339. जलज : जो पानी में उत्पन्न हो । कमल ।
340. जलद : जल से लदा हुआ । बादल । मेघ । जल देने वाला । जलधर ।
341. जलधि : समुद्र । दस पद्म की संख्या जिसमें चौदह शून्य होते हैं ।

342. जलन : बहुत अधिक ईष्या । जलने की पीड़ा ।
343. जाप : नियमित रूप से मन्त्र का विधिपूर्वक मनन करना ।
344. जापी : जप करने वाला या वाली ।
345. जाम : एक प्रहर । तीन घंटों का समय । साढ़े सात घटी का काल ।

346. जितना : जिस परिमाण या नाप का ।
347. जीतना : विजयी होना ।

348. जीवन : प्राण । जीविका ।
349. जीवनी : उम्रभर की घटनाओं का विवरण ।
350. जीवित : जिसमें प्राण हैं । जो सॉस ले रहा हो ।
351. जीविका : जिससे जीवन चलाने के लिये आय मिलती है । व्यापार या नौकरी ।
352. जुट : जोड़ी । मण्डली । दल ।
353. जुटना :एकत्र होना । चिपटना । सटना ।
354. जुटाना : जोड़ना । जमा करना ।
355. जोड़ : गणित में कई संख्याओं का योग ।
356. जोड़ना : संग्रह करना । जोड़ने की क्रिया ।

357. जोड़ा : वर और कन्या । एक आकार की दो वस्तुएं । एक तरह के दो पदार्थ । दोनों पैरों के जूते । एक साथ पहिनने के दो वस्त्र या गहने ।
358. ज्योनार : पका हुआ भोजन ।
359. ज्या : धनुष की डोरी
360. ज्योत्सना : चन्द्रमा का प्रकाश ।
361. ज्वाल या ज्वाला : अग्नि की लौ । अग्नि शिखा । अग्नि की लपट ।
362. ज्वालामुखी : वह पर्वत जिसकी चोटी से अग्नि , धुँआ, राख और ज्वलित धातु व पदार्थ , निरन्तर या समय समय पर निकलते रहते हैं ।

झ' अक्षर के शब्द

363. झक्क : जगमगाता । चमकीला ।
364. झकझका : चमकीला ।
365. झक्की : सनकी । व्यथ की बातें करने वाला ।
366. झकना : व्यर्थ की बातें करना ।
367. झक्कड़ : तीव्र वायु । अन्धड़ ।
368. झकोर : हवा का झोंका ।
369. झकोरा : वायु का वेग ।
370. झकझोरा : धक्का ।
371. झकझोरना : किसी वस्तु को पकड़ कर झटक देना ।
372. झझांर : आग की लपट ।
373. झंझावत : तीव्र ऑधी और वर्षा से भरा तूफान ।
374. झड़ी : महीन बूँदों की वर्षा । निरन्तर बहुत सी बातें कहते जाना ।
375. झड़ : ताले के भीतर का खटका जो ताली से हटता है और ताले को खोलता है ।

376. झड़ना : कण या बूँद की तरह गिरना ।

377. झट या झप : तुरंत । तत्क्षण । उसी पल ।
378. झटपट : अति शीघ्र । जल्दी से ।
379. झपट : अचानक दूसरे के हाथ से वस्तु छीन लेना ।
380. झपाटा : आक्रमण । धावा । बिना सूचना के, मुसीबत की तरह आ धमकना ।
381. झपाका : शीघ्रता से ।

382. झपक : ऑखों की पलक उठाने और गिराने जितना समय का क्षण । बहुत कम समय का माप ।
383. झपकना : पलक गिराना । वेग से आगे बढ़ाना । ठकेलना
384. झपकी : अल्प निद्रा । ऊँघना, यानि बैठे बैठे कुछ देर के लिये सो जाना।

385. झपित : मूँदा हुआ । नींद में भरा हुआ ।
386. झपाना : मूँदना । बन्द करना ।

387. झमक : चमक । प्रकाश । उजाला ।
388. झमझमाना : चमचमाना ।
389. झमना : झुकना । दबना ।
390. झमेला : झंझट , झगड़ा बखेड़ा , भीड़भाड़, टंटा, झबार ।

391. झलक : ज़रा सी देर के लिये देखने का आभास ।
392. झलकाना : चमकाना , आभास , दिखलाना ।
393. झलझल : चमक चमक ।
394. झलझलाहट : चिड़चिड़ाहट ।
395. झलमल : अल्प प्रकाश ।

396. झलमला : चमकीला ।

397. झलमलाना : रह रह कर चमकना ।

398. झलाझल : खूब चमकना ।

399. झॉकना : ताकने की क्रिया । खिड़की के बाहर या किसी ओट के पीछे से क्षण भर के लिए, मुख निकाल कर बाहर देखना ।

400. झॉकी : दृश्य का चित्र ।

401. झाड़ : छोटा सा वृक्ष जिसकी कॉटेदार डालियॉ , भूमि के बहुत पास, तने के निचले हिस्से से निकल कर चारों ओर फैलती हैं । डॉट फटकार जो कोई गल्ती करने पर, सुननी पड़ती है ।

402. झाड़ना : धूल हटाने के लिये चीजों को कपड़े से पौंछना । झटकारना । फटकारना , डॉटना , डपटना । झटके से वस्तु को गिराना ।

403. झाड़ी : छोटा सा झाड़ ।

404. झिलमिल : एक प्रकार का सुन्दर महीन वस्त्र । रह रह कर चमकना, जैसे कि तारे चमकते हैं ।

405. झिलमिला : झीना ।

406. झिलमिलाना : तारों की तरह, ठहर ठहर कर प्रकाश देने वाला ।

407. झिलमिली : द्वारों और खिड़कीयों पर लगने वाला, धूल आदि रोकने, लेकिर हवा आने देने के लिये बना जाली का दरवाज़ा या पतली लकड़ी की पट्टीयों से से बना ढ़ॉचा

408. झीना : बहुत बारीक बुना हुआ कपड़ा । छिद्रयुक्त । धीमा । मन्द । झॅझरा ।

409. झुकना : पीठ को आगे की ओर मोड कर नीचे देखने की क्रिया जो किसी के सम्मान में की जाती है या नीचे गिरी कोई वस्तु उठाने के लिये आवश्यक होती है।

410. झील : चारों ओर से घिरा हुआ एक प्राकृतिक जलाशय ।
411. झिल्ली : किसी द्रव्य या वस्तु की सब से उपर की पतली तह। पतली पन्नी । दूध उबालते समय, उपर दिखाई देने वाली पतली परत ।
412. झुकमुक : ऐसा अन्धकार जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट दिखाई न देती हो ।
413. झुटपुटा : प्रातः और सन्धया का ऐसा समय जब थोड़ा अन्धकार और थोड़ा प्रकाश होता है ।
414. झुरमुट : घनी झाड़ी जिसके अन्दर का हिस्सा देख पाना कठिन हो।
415. झुरकुट : कुम्हलाया हुआ । मुरझाया हुआ ।
416. झुलसना : अधिक ताप के कारण ऊपरी भाग का सूख कर सिकुड़ जाना ।
417. झुलाना : हिलाना । आसरे में रखना । जैसे कि शिशु को पालने में झुलाया जाता है ।
418. झूठ : जो बात सत्य न हो या यथार्थ न हो । असत्य बात । अफवाह ।
419. झूठाः झूठ बोलने वाला व्यक्ति। बनावटी या ठोंगी व्यक्ति ।
420. झूम : झूमने की क्रिया । हवा के वेग के कारण इधर उधर हिलने की क्रिया ।
421. झूमना :किसी वस्तु का इधर उधर हिलना या झोंके खाना ।
422. झूमक : होली में गाया जानेवाला गीत जिसको स्त्रियॉ झूम झूम कर गाती हैं ।
423. झूला : हिंडोला । पेड़ की मजबूत डाली पर रस्सी लटका कर और नीचे के छोर पर लकड़ी का पाटी रख कर झूला बनाया जाता है । पाटी पर बैठ कर या खड़े हो कर पैंग भरी जाती है ।

424. झूलना : झूले पर बैठ कर पेंग भरना । रस्सी की लम्बाई के अनुसार पैंग भरने पद झूला, एक ओर से दूसरी ओर, देर तक हिलता रहता है । अस्थिर रहना । किसी के आसरे में देर तक रूके रहना ।

425. झोला : कपड़े की बड़ी थैली जिसमें बाज़ार से सामान लाया जाता है ।

426. झोली : स्त्री का ऑचल, जिस के दोनों छोर मिला कर झोली बनती है जिसमें नवजात शिशु को या पूजा के समय हल्का दान का सामान लिया जाता है ।

ज्ञ अक्षर के शब्द :

427. ज्ञ :'ग' और 'यं' की संन्धि का एक अक्षर । ज्ञानी , जानने वाला या वाली ।

428. ज्ञा : कविता की आज्ञा ।

429. ज्ञात : जाना हुआ । विदित ।

430. ज्ञाता : जानकार । जानने वाला या वाली । ज्ञानी । ज्ञातक ।

431. ज्ञाति : एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य ।

432. ज्ञेय : जानने योग्य ।

आगे भाग 4 में